

दर्शन स्तुति

अज्ञान अवस्था

अति पुण्य उदय मम आया, प्रभु तुमरा दर्शन पाया ।
अब तक तुमको बिन जाने, दुख पाये निज गुण हाने ॥

पाये अनंते दुख अब तक, जगत को निज जानकर ।
सर्वज्ञ भाषित जगत हितकर, धर्म नहीं पहिचान कर ॥

भव बंधकारक सुखप्रहारक, विषय में सुख मानकर ।

निज पर विवेचक ज्ञानमय, सुखनिधि-सुधा नहीं पान कर ॥१॥

ज्ञान अवस्था

तब पद मम उर में आये, लखि कुमति विमोह पलाये ।

निज ज्ञान कला उर जागी, रुचि पूर्ण स्वहित में लागी ॥

रुचि लगी हित में आत्म के, सतसंग में अब मन लगा ।

मन में हुई अब भावना, तब भक्ति में जाऊ रंगा ॥

प्रिय वचन की हो टेव, गुणिगण गान में ही चित्त पगै ।

शुभ शास्त्र का नित हो मनन, मन दोष वादनतैं भगै ॥२॥

मुनि अवस्था

कब समता उर में लाकर, द्वादश अनुप्रेक्षा भाकर ।

ममतामय भूत भगाकर, मुनिव्रत धारूँ वन जाकर ॥

धरकर दिगम्बर रूप कब, अठ-बीस गुण पालन करूँ ।

दो-बीस परिषह सह सदा, शुभ धर्म दश धारन करूँ ॥

तप तपूँ द्वादश विधि सुखद नित, बंध आश्रव परिहरूँ ।

अरु रोकि नूतन कर्म संचित्त, कर्म रिपकों निर्ज करूँ ॥३॥

अरहंत - सिद्ध अवस्था

कब धन्य सुअवसर पाऊँ , जब निज में ही रम जाऊँ ।

कर्तादिक भेद मिटाऊँ रागादिक दूर भागाऊँ ॥

कर दूर रागादिक निरन्तर, आत्म का निर्मल करूँ ।

बल ज्ञान दर्शन सुख अतुल, लहि चरित क्षायिक आचरूँ ॥

आनन्दकन्द जिनेन्द्र बन, उपदेश को नित उच्चरूँ ।

आवै अमर कब सुखद दिन, जब दुःखद भवसागर तरूँ ।४।